



श्री रामकुमार आत्रेय जी की रचनाओं में व्यंग्य

कुमारी मीनाक्षी शर्मा
शोध-छात्रा, हिंदी विभाग

परिचय:- मानव ईश्वर की श्रेष्ठतम कृतियों में से एक है । यह भी सम्भव है कि वह अच्छाईयों के संग बुराईयों को सजोएं रखना है । अच्छे एवं बुरे कार्य उसके द्वारा होते रहते हैं । भौतिकवादी परम्परा ने ईर्ष्या, द्वेष, अलगाव व आडम्बरों को उसके जीवन को जहरीला बना दिया है। पशु से बदतर जीवन जीने के लिए विवश हुआ । रंग-भेद, जाति व्यवस्था , धार्मिक उन्माद के कारण स्वार्थी हो गया । जैसे-जैसे सभ्यता की ओर बढ़ता रहा उनके परिवेश में विसंगतियों अनौचित्य बढ़ता गया परिणाम स्वरूप शोषक एवं शोषित वर्ग में बंट गया। ऐसे में किसी संवेदनशील साहित्यकार ने इस पर कड़ी चोट की होगी तथा प्रहसनात्मक रूख अपनाया होगा जहाँ से व्यंग्य का साहित्य में आगमन हुआ ।

व्यंग्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पाया है कि इसकी उत्पत्ति अंग्रेजी के "सैटापर" शब्द से हुई । परन्तु व्यंग्य पर डा० कामिल बुल्केन "व्यंगिका" व्यंग्यरचना, प्रहसन, व्यंग्य उपहास तथा विद्रुप का उल्लेख किया है ।

इसकी उत्पत्ति "वि" उपसर्ग तथा अंग "धातु" से हुई । डा०

रामखेलवान पाडै के अनुसार "व्यंग्यात्मक आवेश प्राचीन ग्रन्थ वेदों में मिल सकता है किन्तु नाटयशास्त्र व्यंग्यात्मकता के संकेत स्पष्ट है " वैसे भी जब मनुष्य समाज, कानून व नियमों की अवहेलना करता है तो व्यंग्य ही सुधारात्मक कड़ी है जो सचेत करती है । हरिशंकर परसाई ने इस संदर्भ में उद्धृत किया है ।^१ अब मन में यह अभिमान उठाये कि यह विशेष चीज है जिसका नाम तक लेना बाकी है , यह बात समाप्त करती है ।

आज व्यंग्य व्यक्ति, परिवार, समाज ,राष्ट्र और विश्व सुधार हेतु उपयोगी शास्त्र का कार्य करता है । व्यंग्य की अनेकों परिभाषाओं का आकलन करने पर पाया कि यह एक सचेतक है । जो व्यक्ति को भटकने नहीं देता । श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार व्यंग्य वह है जो जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हंस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो ओर फिर



भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासात्मक बना लेना हो जाता है।³ पर डा० राम कुमार वर्मा कि दृष्टि में आक्रमण करने कि दृष्टि से वस्तु की स्थिति को विकृत कर उसमें हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है।⁴

व्यंग्य मानव स्वभाव का अंग है। समाजोन्मुखता, व्यंग्य का धर्म है। वैज्ञानिक अनुसंधान के इस युग में होने वाले अविष्कारों के फलस्वरूप हमारे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और साहित्यिक मान्यताओं में परिवर्तन हो रहा है। जीवन असंतुलित, अस्थिर हो रहा है। जिससे मानव में और उसके सारे सामाजिक ढांचे में विसंगतियों दुर्बलताओं का आना अस्वभाविक नहीं है। मानव व समाज की इन विसंगतियों, विषमताओं, दुर्बलताओं अनाचारों, प्रदूषणों को उदघाटित करते हुए उसमें पर्याप्त सुधार लाने के लिए व्यंग्य रूपी शास्त्र का सहारा लेना पड़ता है। व्यंग्य इन विकृतियों को दूर करके मानव मूल्यों और नैतिक मूल्यों को स्थापित करता है। प्रस्तुत अध्याय में व्यंग्य की व्युत्पत्तिगत अर्थ स्वरूप, तत्वों, भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई परिभाषाएँ, हास्य, परिहास, पैरोडी, उपालम्भ, प्रहसन, वक्रोक्ति आदि कथन आत्रेय जी कि कहानियों में उल्लेख किया गया है।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा अनेकानेक ग्रंथों का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि बहुत से व्यंग्यकार “व्यंग्य” वर्ग व्यंग्य लिखते हैं। जयशंकर प्रसाद जी ने भी अनेक स्थानों पर व्यंग्य का प्रयोग किया।⁵ प्रसिद्ध व्यंग्यकार शरद जोशी भी ‘व्यंग्य’ का प्रयोग करते थे।⁶ क्योंकि उन्हें इस तरह बोलने में आसानी होती थी। डा० बैजनाथ सिंहल भी ‘व्यंग्य’ शब्द को सही मानते हैं, लेकिन बहुसंख्यक वर्ग द्वारा “व्यंग्य” का इस्तेमाल करने के कारण वे भी व्यंग्य का प्रयोग करते हैं। व्यंग्य में कटाक्षपूर्ण शब्दों का प्रयोग होता है। किसी पर कटाक्ष करने या मारने को व्यंग्य की संज्ञा दी जाती है। इसमें कटुता का भाव निहित रहता है।

रामकुमार आत्रेय जी व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में निर्मित हुई विसंगतियों का यथार्थ अभिव्यक्ति दी है। इनकी रचानाओं में गंभीर व्यंग्य भी हास्य का रूप लेकर पाठकों को हँसाने में समर्थ बना है। आत्रेय जी ने समाज में व्याप्त विसंगतियों और विकृतियों से अवगत हैं। उनके व्यंग्य संग्रहों में सामाजिक, परिवारिक, प्रशासनिक, चिकित्सा, न्याय आदि क्षेत्रों में व्याप्त विसंगतियों, विकृतियों और दुर्बलताओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है।



व्यंग्य मानव की नैसर्गिक प्रवृत्ति है व्यंग्य का सम्बन्ध जीवन से है । जीवन की अभिव्यक्ति साहित्य में होता है । व्यंग्य की धारा सदैव प्रवाहित होती रहती है । वर्तमान स्थिति यह है कि कहानी , उपन्यास, नाटक एवं कविता व्यंग्य के पैनेपन के कारण ही पढ़ी जा रही है । व्यंग्य आज साहित्यिक कलात्मकता की पहचान बन गया है ।

आत्रेय जी की कहानियों में वर्तमान प्रदुषित राजनीतिक वातावरण पर निर्भीक रूप से गंभीर कटाक्ष करता है । स्वतन्त्र भारत को लेकर आज जनता ने जो स्वप्न संजोएँ थे , । वे स्वतन्त्रता – प्राप्ति के पश्चात कुछ वर्षों में ही खंडीत हो गए । इन्होंने इस स्थिति के लिए पूर्ण रूप से स्वातंत्र्योत्तर राजनितिक एवं राजनीतिज्ञों को दोषी ठहराया है । स्वतन्त्रता –प्राप्ति के पश्चात भारतीय राजनीतिज्ञों ने कुर्सी हथियाने के लिए क्या-क्या आडम्बरों की रचना की । धन और बल के अतिरिक्त वर्तमान राजनिति में लेखक ने चाटुकारिता को अनैतिक कर्म मानते हुए उस पर गंभीर व्यंग्य किए हैं । चाटुकार लोगो को “कुत्ते” की घृणास्पद संज्ञा प्रदान की है । – “राजनिति कि शिक्षा ग्रहण करने आए अपने एक युवा शिष्य को नेता जी ने पहला पाठ यों पढ़ाया –

“ देखों बेटा , दरवाजे पर खड़ा कुत्ता , पूँछ हिलाता हुआ कितना सुन्दर लग रहा है । ”

कहानिकार रामकुमार आत्रेय ने वर्तमान नेताओं के उन कुकृत्यों के साथ –साथ कुर्सी पाने के लिए की जाने वाली तिकड़मबाजी पर भी व्यंग्य किए हैं । वर्तमान राजनेता ऐश्वर्य और विलासिता से भरा हुआ जीवन यापन करता है । तथा मात्र दिखावे के लिए वे गांधीवादी विचारों की चर्चा करते हैं राजनेताओं को जनता से कोई भी सरोकार नहीं है । सामान्य जनता की आँखों में निरंतर धूल झोक कर मन्त्री-पद की कुर्सी पर विराजमान बने रहना ही उनका कार्य होता है । नेता लोग अपने पद के बचाव हेतु जनता के समक्ष “कुत्तों ” कि भाँति पूँछ हिलाते रहते हैं । चुनाव के समय तो वे वोट माँगने के लिए घर-घर पहुँच जाते हैं । परन्तु जब उनके हाथों में सत्ता आ जाती है तो वो किसी को भी नहीं देखते हैं ।

“परीक्षक ने परीक्षार्थियों की मौखिक सूझबूझ की जाँच करने के लिए एक ऐसे विषय पर थोड़े से शब्दों में एक कहानी लिखने को कहा जोकि शुद्ध रूप से झुठ हो लेकिन



बिल्कुल सच जैसा लगे केवल एक ही परीक्षार्थी ने सही उत्तर दिया। उत्तर इस प्रकार था “बीसवीं शताब्दी में जम्बुद्वीप में एक मन्त्री था और वह बहुत ईमानदार था।”

वर्तमान युग में मनुष्य के पारस्परिक स्वभाव में आए परिवर्तन में हम शुष्कता के अन्य कारण स्वार्थपरत एवं अवसरवादिता है। लेखक जी ने अपने साहित्य में स्वार्थ एवं अवसर वादिता के वातावरण में पल रहे लोगो पर करारा व्यंग्य किया है। नेता लोग कुर्सी को प्राप्त करने के लिए अपने सिद्धान्तों को भी तोड़ देता है उसको सही और गलत में कोई अन्तर नहीं पता बस किसी भी प्रकार से कुर्सी मिल जाए।

“बहुत बड़ी कुर्सी को एक विश्वास पात्र अधिकारी की जरूरत थी। अधिकारी को एक विशेष जगह पर तैनात किया जाना था। ऐसा करने से कुर्सी का मान भी बढ़ता और शान भी। काले को सफेद और सफेद को काला करने की मनचाही छूट तो साथ में जुड़ी ही रहती है। इस आधार पर दो सुयोग्य अधिकारियों के नाम उभर कर आगे आए।”

कुर्सी ने बारी-बारी से उन दोनों को अपने पास बुलाया। पहले के सामने आते ही पूछा गया — “दो और दो” चार

“पुरे चार, सर/मैडम, न जरा —सा कम और जरा —सा अधिक!” अधिकारी ने तपाक से उत्तर दिया “शाबाश” ! बहुत ही सावधान और सुयोग्य अधिकारी हो तुम ! कुर्सी ने मुस्कुरा कर उसकी पीठ थपथपाई।

तुरन्त बाद दूसरी अधिकारी सामने आया। उससे भी वही सवाल पूछा — गया — “दो और दो” चार

जितने आप कहे, सर/मैडम, ठीक उतने ही ! अधिकारी ने गर्दन झुकाते हुए उत्तर दिया। उस विशेष जगह पर दुसरे अधिकारी को नियुक्त कर दिया गया।⁹

आत्रेय जी के साहित्य सांस्कृतिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों में आई विकृतियों को भी प्रतिबिंबित करता है। विवेचित साहित्य स्वातंत्र्योत्तर भारत में शैक्षिक क्षेत्र में आई दुर्बलताओं पर गहरा क्षोभ व्यक्त करता है। शिक्षा —प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान देने के कारण शिक्षक को राष्ट्र —निर्माता की संज्ञा से विभूषित किया गया है। परन्तु वर्तमान में शिक्षकों में अनेक दुर्बलताएँ आ



गई है । विवेचन साहित्य वर्तमान अध्यापको मे आए ज्ञान के अभाव उनकी धनलोलुपता के कारण पनपती –ट्यूशन –पद्धति, और उनकी चरित्र हीनता पर करारा व्यंग्य किया है ।

आत्रेय जी की कहानी 'काम' के द्वारा वर्तमान शिक्षक के कार्यो और उसमे व्याप्त दुर्बलताओ का बड़े सहज ढंग से व्यक्त किया है , अध्यापक की अरुचि के कारण छात्र भी अपने अध्यपन से रुचि हटा लेते है । अर्थात वर्तमान के अध्यापक अपने कार्य के प्रति पूर्णतः निष्ठावान नही है वे तो केवल पैसा कमाने की क्रिया को सोचते रहते है । "मेरे वाली नौकरी मे तो मजे ही मजे है । भैया वेतन भी अच्छा और काम भी कुछ नही । चाँहू तो दूसरी कोई भी बिजनेस भी कर सकता हूँ । उसने गर्व से कहा ।"

अरे हा तुमने बताया तो है हीं कि तुम किस पद पर कार्य कर रहे हो छ " डाक्टर ने जिज्ञासावश पूछा ।

"भैया मैं तो आजकल एक सरकारी स्कूल मे अध्यापक लगा हुआ हूँ । इसके इलावा ट्यूशन के द्वारा भी बहुत कमा लता हूँ।¹⁰ "

समाज की सुरक्षा तथा शान्ति बनाए रखने के लिए सरकार ने प्रशासन –तंत्र स्थापित किया है । पुलिस प्रशासन का कार्य समाज मे शान्ति तथा एकता बनाए रखना होता है। परन्तु आज तो पुलिस नेताओ की हाथ कि कठपुतलियाँ बनी हुई है । आम जनता को तो केवल पुलिस से निराशा ही हाथ लगती है । इसलिए कहा जाता है कि न तो पुलिस की दोस्ती अच्छी है ना ही दुश्मनी अच्छी । वर्तमान मे तो पुलिस–प्रशासन अपना कार्य केवल अपने फायदे के लिए करती है । जँहा इसको लाभ या पैसे मिलते है वे उसी का कार्य करती है और कहते है कि पुलिस और चोर का नाता भाई–चारे का है । चोर भी चोरी पुलिस के कहने पर ही करते है । क्योकि जो माल चुराया गया है उसका आधा हिस्सा पुलिस का और आधा चोरो का । आत्रेय जी ने अपनी कहानी में "लुटेरा" में पुलिस की स्थिति बताई है ज्यों ही वह दो सिपाहियो के साथ उस लुटेरे के पास पहुँचा , लुटेरे ने एकदम से कहा , यही इंस्पेक्टर तो असली लुटेरा है यही तो इंस्पेक्टर तो असली लुटेरा है यही तो थोड़ी देर पहले मुझे इस बस्ती मे लाया था लुट का ज्यादा माल तो हर रोज इसे ही मिलता है। "



वर्तमान समाज में व्यक्तित्व विकास की चेतना के कारण विघटित होते परिवारों टूटते दांपत्य— संबंधों, कें प्रति उपेक्षित स्थिति एवं महिलाओं से होते दुर्यवहार को अपनी कहानियों में वर्णित किया है । आत्रेय जी ने वृद्ध माता—पिता की अत्यन्त दयनीय स्थिति का यथार्थ आंकलन किया है । नारी की दशा समाज में आज भी वही है जो प्राचीन काल की दशा थी । इक्कीसवीं शताब्दी में भी नारी दशा में विशेष सुधार नहीं है पुरुष पुरुष के द्वारा नारी की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं है नारी आज भी शोषित और पीड़ित है । जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थ वर्णन किया गया है । इनकी कहानी में नारी शोषण का शिकार होती रही है । आत्रेय जी की कहानियों में महिलाओं की स्थिति को वर्णित किया है छह वर्ष की बालिका से “बलात्कार” से रोज—रोज के अखबार की रोज—रोज की ताजा खबर ” । महिलाओं और वृद्धों की स्थिति एक समान है इन दोनों के साथ आत्रेय जी की कहानियों में दुर्यवहार देखने को मिलता है । — वह तुरन्त पत्नी के पास पहुंचा और अपने बड़े पिता के विषय में पूछा। पत्नी ने हसते हुए उत्तर दिया — “ सुबह आपके ड्यूटी पर चले जाने के बाद पिताजी अपना सारा सामान उठाकर गाँव चले गए । इस प्रकार आत्रेय जी ने हिन्दी व्यंग्य—परम्परा के एक प्रमुख अंग है ।

निष्कर्ष:— राजनीतिक परिवारों पर व्यंग्य मानव जीवन और समाज से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है । राजनीति में मूल्य और सिद्धान्त धीरे—धीरे समाप्त हो रहे हैं और सरकार की कार्यप्रणाली में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ, दिखाई दे रही हैं । इन्होंने राजनीति में राजनीतिज्ञों, सामाजिक परिवेश, आतंकवाद, सांप्रदायिकतावाद, जातिवाद, इनकी मूल्यहीनता और रंग बदलने की प्रवृत्ति पर प्रहार किया है ।

समाज में व्याप्त विसंगतियों की पोल खोलने का प्रयास अपने व्यंग्य के द्वारा करने का प्रयास किया है । उन्होंने विविध विद्या—प्रणाली के सहारे लिखी अपनी रचनाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में पल्लवित हुई विसंगतियों को यथार्थ अभिव्यक्ति दी है । वे व्यंग्य के माध्यम से समाज में व्याप्त अव्यवस्था पुनः करना चाहते हैं ।



सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

- 1 अग्रेजी हिन्दी कोश, पृ0592
- 2 हरिशंकर परसाई , मूल के पाँच पौछे भुमिका पृ01
- 3 कबीर पृ0164
- 4 रिमझिम पृ0 13
- 5 जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त स्कन्दगुप्त:- नौवां संस्करण स0 2011 विक्रमी पृ0 62
- 6 शरद जोशी, व्यंग्य की दौड़ धुप , जनसत्ता पृ0 33
- 7 पहला पाठ , लघुकथा संग्रह, इक्कीस जूते पृ0 8
- 8 सच्चा झुठ, लघुकथा संग्रह , वही इक्कीस पृ0 45
- 9 दो और दो , लघुकथा संग्रह छोटी –सी बात पृ0 17
- 10 काम, लघुकथा संग्रह आँखो वाले अन्धे पृ0 64
- 11 लुटेरे, लघुकथा संग्रह छोटी सी बात पृ0 138
- 12 पत्नी की खुशी, लघुकथा , प्रेरणा, लेखन के लिए पृ0 86